दृष्टि The Vision

भूगोल (वैकल्पिक विषय)

माड्यूल-IV

(प्रथम प्रश्नपत्र-समग्र पाठ्यक्रम)

DTVF/18(JS)–OPS–**G4**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): सुनिल कुमार धनवत्ता

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 4 / 17 जुलाई, 2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

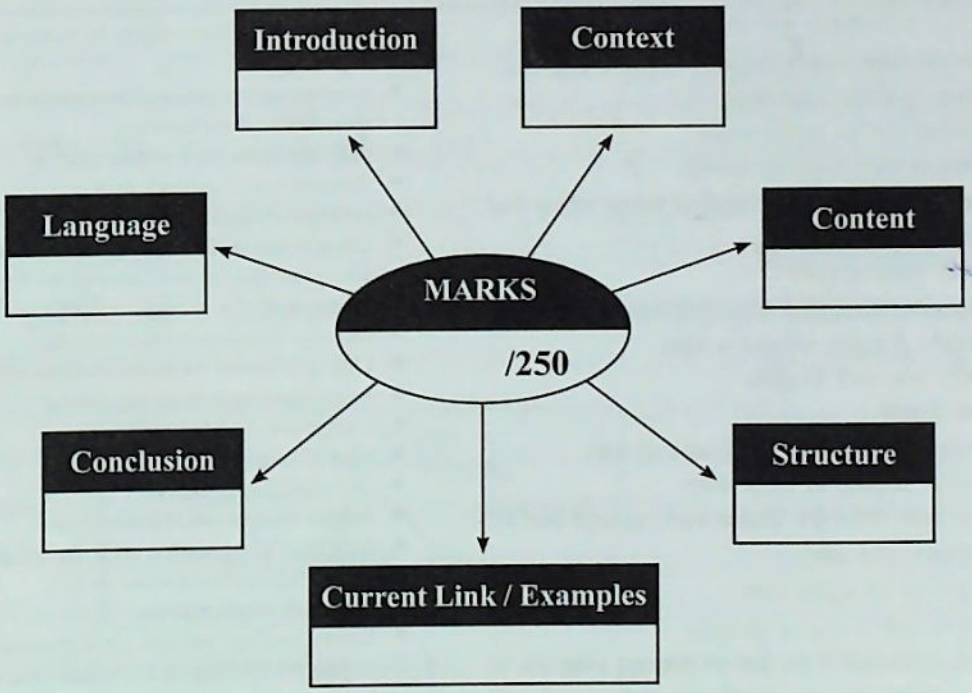

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

दृष्टि The Vision

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क/ SECTION - A

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) 'गेसर' और 'धुँआरे' के बारे में संक्षिप्त चर्चा कीजिये।

Briefly discuss geysers and fumaroles.

जब भूगर्भ में से किसी छिद्र के माध्यम से गर्म जल का सविराम निष्कासन होता है तो उसे गेसर कहा जाता है।

जब जल किसी माध्यम से भूगर्भ में प्रवेश करता है तो गर्म मैग्मा के संपर्क में आकर वाष्प में परिवर्तित हो जाता है।

जब उसको भूपर्पटी में कोई छिद्र मिलता है तो वह बाहर निकलने लगता है। इसमें यह जल रुक-रुक कर निकलता है।

गेसर के पृथ्वी पर कई उदाहरण हैं जिसमें अमेरिका के येलोस्टोन पार्क का गेसर प्रमुख है

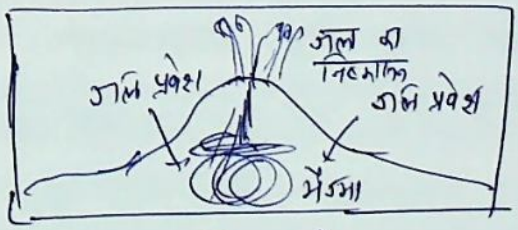

चित्र - गेसर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वहीं जब भूपर्पटी के किसी छिद्र में से जब अत्यधिक मात्रा में जलवाष्प का निष्कासन होता है तो दूर से देखने पर ऐसा लगता है जैसे कि धुंआ निकल रहा हो।

इसका निर्माण भी जल के भूगर्भ में प्रवेश करने के पश्चात मैग्मा के संपर्क में आने से होता है। परंतु गेसर के विपरीत इसमें जलवाष्प की मात्रा ज्यादा होती है तथा यह निरन्तर निकलता रहता है।

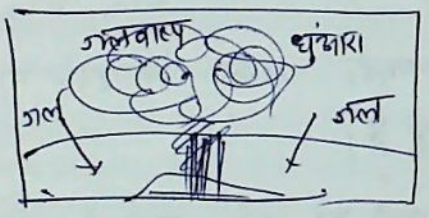

चित्र : धुंआरा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(b) उष्णकटिबंधीय चक्रवात की क्रियाविधि की संक्षिप्त विवेचना कीजिये।

Briefly discuss the mechanism of tropical cyclone.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का निर्माण उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में निम्नदाब के केन्द्र की ओर हवाओं के अभिसरण से होता है। इनकी गति लगभग 120 - 140 km/घंटा तक होती है।

इसके लिए सागर का तापमान 27°c के आसपास होना चाहिए तथा कोरियोलिस बल का होना अत्यन्त आवश्यक है।

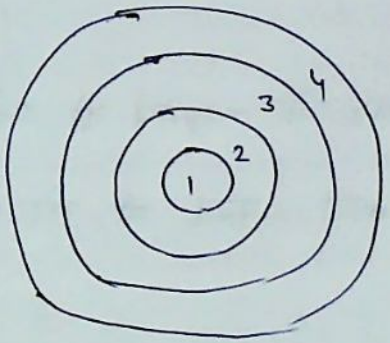

→ उष्णकटिबंधीय चक्रवात

1 - चक्रवात की आंख
2 - चक्षु दीवार (Eye wall)
3. - आन्तरिक वलय
4. बाहरी वलय

ये चक्रवात पूर्वी पवनों के प्रभाव के कारण पूर्व से पश्चिम की ओर गति करते है तथा महाद्वीपों के पूर्वी भाग को विनाशकारी रूप से प्रभावित करते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैं।

जब चक्रवात की आँख का किसी क्षेत्र में आगमन होता है तो वहाँ साफ आसमान पाया जाता है क्योंकि यह हवाओं का अवतलन होने से उच्च दाब केन्द्र का निर्माण होता है।

वहीं चक्षु भित्ति में हवाओं का तीव्र गति से अभिसरण होता है तथा कपासी वर्षा मेघों के निर्माण से भयंकर वर्षा होती है। यह क्षेत्र सबसे विनाशकारी होता है।

वहीं आन्तरिक वलय में चक्षुभित्ति की अपेक्षा कम वर्षा होती है जो बाहरी वलय की ओर कम होती जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उष्णकटिबंधीय चक्रवात केवल सागरीय सतह पर निर्मित होते हैं तथा स्थल भागों पर जाकर भारी विनाशलीला करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) उत्तरी अटलांटिक प्रवाह पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on the North Atlantic Drift.

उत्तरी अटलांटिक प्रवाह एक प्रकार का महासागरीय जल प्रवाह है जो गल्फ स्ट्रीम के आगे अटलांटिक महासागर के उत्तरी भाग में होता है।

वस्तुतः प्रवाह का आकार महासागरीय धारा से बड़ा होता है तथा यह प्रचलित पवनों के द्वारा काफी प्रभावित होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्तरी अटलांटिक प्रवाह की दिशा पछुआ पवनों के द्वारा निर्धारित की जाती है। यह भारी मात्रा में गर्म जल का स्थानान्तरण विषुवतीय क्षेत्रों से ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर करता है ताकि ऊष्मा संतुलन बना रहे।

यह प्रवाह पश्चिमी यूरोप की जलवायु को काफी हद तक प्रभावित करता है। गर्म जल के वाष्पीकरण के कारण वर्षा होती है। वहीं गर्म जल के कारण यहाँ सर्दी की तीव्रता में कमी आती है।

इसी के साथ यहाँ पर अत्यधिक शीत ऋतु में भी नहीं जमते क्योंकि उत्तरी अटलांटिक प्रवाह इनको गर्म रखता है।

इसी के साथ उत्तरी सागर की लवणता में वृद्धि के पीछे भी यह प्रवाह जिम्मेदार है तथा मछलियों के लिए पोषक तत्वों की आपूर्ति करता है।

अतः स्पष्ट है कि उत्तरी अटलांटिक प्रवाह महासागरीय जल का विशिष्ट प्रवाह है जो आपसास के वातावरण को काफी हद तक प्रभावित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) हिंद महासागर में लवणता के वितरण की चर्चा कीजिये।

Discuss the distribution of salinity in the Indian Ocean.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रति 1000 ग्राम में पाये जाने वाले लवणों की ग्राम में मात्रा को लवणता कहते है इसको ‰ के द्वारा व्यक्त किया जाता है।

लवणता को प्रभावित करने वाले कारक -

(i) अक्षांशीय स्थिति

(ii) तापमान एवं वाष्पीकरण की मात्रा

(iii) स्वच्छ जल की आपूर्ति

(iv) स्थल एवं जल का वितरण

(v) समुद्री जीवों का प्रभाव

इन्हीं कारकों के परिणामस्वरूप हिन्द महासागर में लवणता में स्थानिक भिन्नता पायी जाती है।

हिन्दमहासागर में विषुवतरेखा के पास लगभग 34‰ लवणता पायी जाती है जो उपोष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में सर्वाधिक हो जाती है।

इसी के साथ हिन्द महासागर के सीमान्त सागरों व खाड़ियों में भी लवणता में काफी भिन्नता पाई जाती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अरब सागर की लवणता बंगाल की खाड़ी से की अपेक्षा ज्यादा होती है क्योंकि बंगाल की खाड़ी में अनेक नदियों द्वारा स्वच्छ जल की आपूर्ति की जाती है परन्तु अरब सागर में ऐसा नहीं होता

वहीं लाल सागर व फारस की खाड़ी में भी हिन्द महासागर की अपेक्षा ज्यादा लवणता पायी जाती है। इसके पीछे स्थलीय प्रभाव को ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है। यहाँ वाष्पीकरण ज्यादा होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि हिन्दमहासागर के सभी स्थानों पर लवणता एक समान न होकर भिन्न-भिन्न पायी जाती है।

चित्र: हिन्द महासागर की लवणता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) विषुवतरेखीय वर्षा वनों में पाए जाने वाले जंतु समुदायों का संक्षेप में वर्णन करें।
Briefly describe the zoological composition of equatorial rain forests.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विषुवतरेखीय प्रदेशों में वर्ष भर उच्च तापमान व उच्च आर्द्रता पाई जाती है तथा ऋतु परिवर्तन नगण्य होता है। इसी कारण इस क्षेत्र में भारी संख्या में वनस्पति एवं जन्तु समुदाय पाया जाता है।

विषुवतरेखीय प्रदेशों में आर्द्रता के अधिक होने के कारण अनेक रोगों का प्रसार होता है जिसके परिणामस्वरूप एक ही प्रजाति के ज्यादा जीव पनप नहीं पाते इसलिए इन क्षेत्रों में जैव विविधता सर्वाधिक पायी जाती है।

विषुवतरेखीय वर्षा वनों में स्तनपायी, उभयचर, सरीसृप, पक्षियों इत्यादि की हजारों प्रजातियां पायी जाती हैं।

यहाँ पाए जाने वाले जन्तुओं में शेर, भालू, साँप, बन्दर, लंगूर, हाथी इत्यादि प्रमुख हैं।

- प्रमुख स्तनपायी - बन्दर, भालू, शेर, ~~[illegible]~~, ये सभी एक जटिल खाद्य श्रृंखला का निर्माण करते हैं

→ सरीसृप - सांप, कछुआ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उभयचर - मेंढक, कछुआ

इसी के साथ यहाँ मछलियों की भी अनेक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

अतः स्पष्ट है कि यह क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से काफी समृद्ध है। इन क्षेत्रों में अमेजन नदी क्षेत्र, कांगो बेसिन, इण्डोनेशिया इत्यादि प्रमुख है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) अधिकांश पर्वत महाद्वीपीय किनारों के समानांतर सागर के सामने स्थित हैं, परंतु हिमालय इस प्रणाली के अंतर्गत नहीं है। कथन का मूल्यांकन करते हुए हिमालय की उत्पत्ति को समझाइये। 15

Most of the mountains stand close to the oceans along the continental edges, but the Himalayas do not come under this system. Evaluate the statement and explain the origin of the Himalayas. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर्वत निर्माण की प्रक्रिया अनेक कारकों से प्रभावित होती है। विश्व में पर्वतों के निर्माण के बारे में विद्वानों द्वारा अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है।

एण्डीज व रॉकी पर्वत महाद्वीपों के किनारों पर पाये जाते हैं। इसके पीछे प्रमुख कारण महासागरीय प्लेट (प्रशान्त प्लेट) एवं महाद्वीपीय प्लेट (अमेरिकी प्लेट) के अभिसरण को माना जाता है।

परन्तु यह सर्वदा आवश्यक नहीं है कि पर्वत केवल महाद्वीपों के किनारों पर ही पाये जाते हो। अल्पस, हिमालय पर्वत इत्यादि ऐसी प्रणाली का अनुसरण नहीं करते हैं।

हिमालय की उत्पत्ति के बारे में अनेकों विद्वानों ने अपने मतों का प्रतिपादन किया है।

(क) वेगनर का मत. वेगनर का मानना था कि यूरेशिया तथा भारतीय उपमहाद्वीप के बीच टेथिस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सागर विद्यमान था। जब महाद्वीपों का विस्थापन हुआ था तो भारतीय उपमहाद्वीप के यूरेशिया भूखण्ड के साथ टकराने पर टेथिस सागर के अवसादों का वलन हो गया तथा हिमालय का निर्माण हुआ।

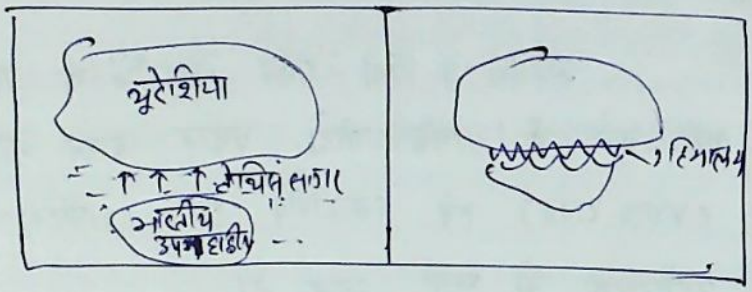

(ख) कोबर ने ~~भूसन्नति~~ भूसन्नति के आधार पर हिमालय के निर्माण को समझाने का प्रयास किया है। कोबर ने टेथिस सागर को एक भूसन्नति माना तथा भारतीय उपमहाद्वीप (गोंडवानालैण्ड) एवं यूरेशिया को अग्रभागों (Forelands) की संज्ञा दी। जब संपीडन के कारण इन अग्रभागों का एक दूसरे की ओर अभिसरण हुआ तो टेथिस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सागर के अवसादों में वलन की क्रिया के परिणामस्वरूप हिमालय एवं क्युनलुन पर्वतों का निर्माण हुआ। तिब्बत के पठार को कोबर ने मध्यपिण्ड की संज्ञा दी।

(ब) हिमालय के निर्माण के संबंध में प्लेट टेक्टोनिक सिद्धान्त का मानना है कि हिमालय की उत्पत्ति यूरेशिया प्लेट एवं इण्डो-आस्ट्रेलिया प्लेट के अभिसरण से हुई है। इससे इन दोनों प्लेटों के बीच अवस्थित टेथिस सागर के अवसादों में वलन की क्रिया हुई।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिमालय की उत्पत्ति के संबन्ध में विद्वानों में मतैक्यता नहीं है। परन्तु प्लेट विवर्तनिकी सिद्धान्त को विद्वानों द्वारा सर्वाधिक मान्यता दी जाती है

चित्र: प्लेट विवर्तनिकी सिद्धान्त

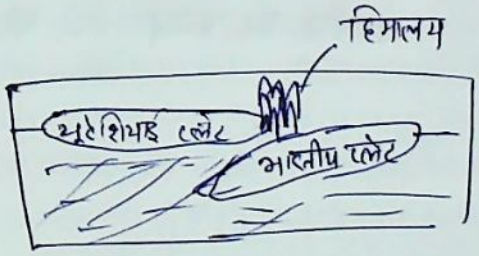

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) जलवायु भू-आकारिकी के संबंध में 'विशिष्ट स्थलरूप' किसी भूगोलवेत्ता के अध्ययन का मुख्य बिंदु होता है। मूल्यांकन कीजिये। 15

'Specific landform' is an important aspect in study of climatic geomorphology. Evaluate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी क्षेत्र की जलवायु वहां के विशिष्ट क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है अतः भूगोलवेत्ता जलवायु के अध्ययन के लिए उस क्षेत्र की भूआकृतिकी का अध्ययन प्रमुखता से करते हैं।

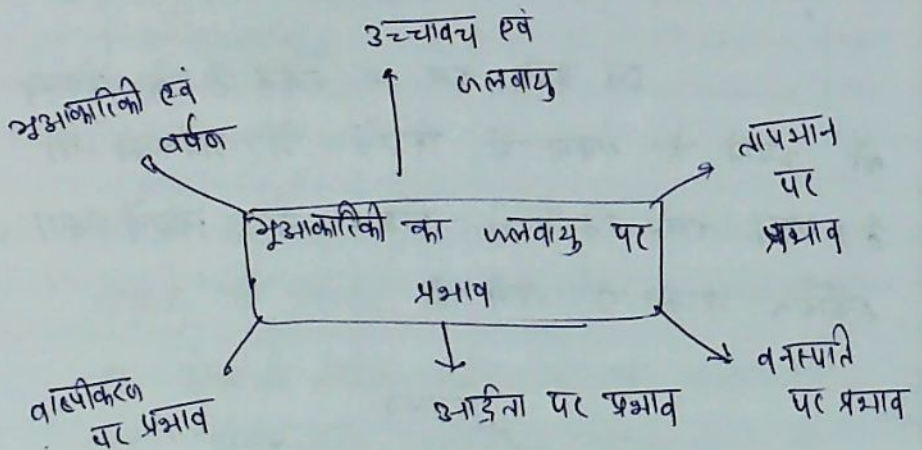

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ पहाड़ों पर व मैदानों पर वर्षा में अन्तर होना

→ पहाड़ी जलवायु व मैदानी जलवायु में अन्त(

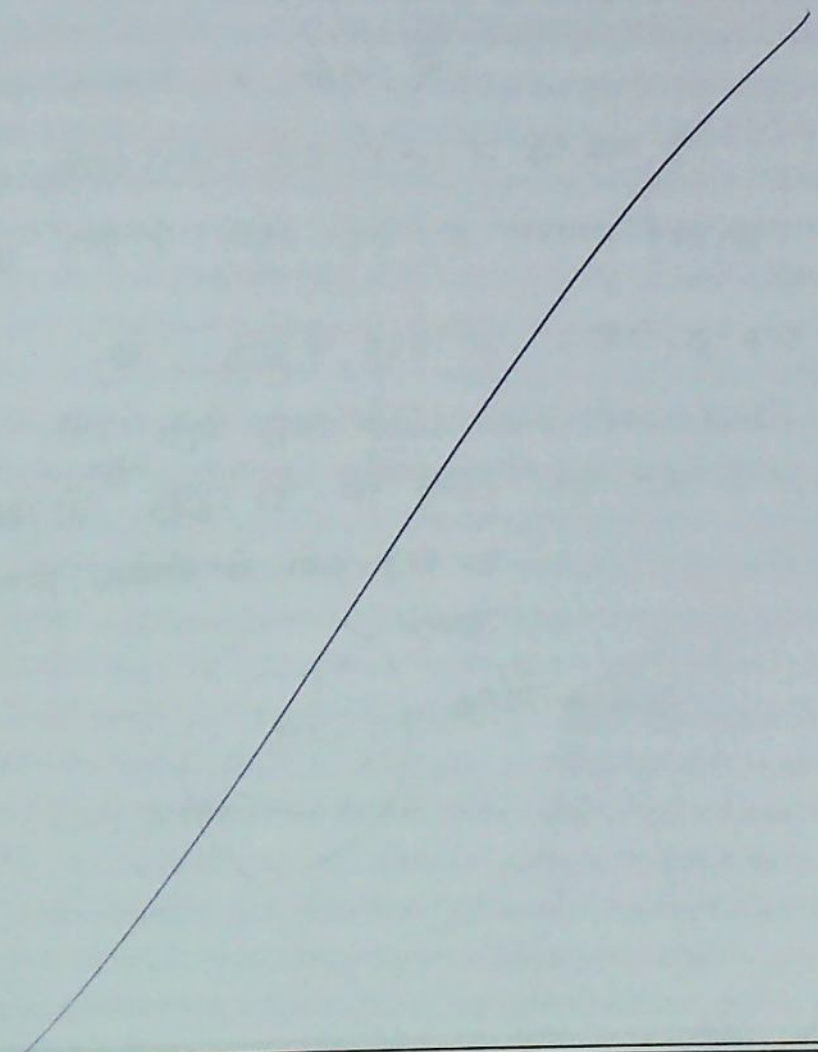

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) वेगनर के महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धांत का समालोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिये। 20

Critically evaluate the Continental Drift Theory of Wegener. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धान्त का प्रतिपादन जर्मन मौसम विज्ञानी अल्फ्रेड वेगनर ने सन् 1912 ई. में किया था। उनका प्रमुख उद्देश्य विश्व में घटित हुए जलवायु परिवर्तन का अध्ययन करना था।

वेगनर ने अपने सिद्धान्त के प्रतिपादन के लिए निम्न मान्यताओं का सहारा लिया.

(क) सियाल (SiAl) सिमा (Sima) पर तैर रहा है
(ख) पृथ्वी के विभिन्न भागों का विस्थापन हुआ है

वेगनर ने बताया कि कार्बोनिफेरस काल के दौरान संपूर्ण भूखण्ड 'पैंजिया' नामक विशाल महाद्वीप के रूप में एकीकृत था। यह पैंजिया चारों ओर से पैंथालासा नामक जलराशि से घिरा हुआ था

कार्बोनिफेरस काल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

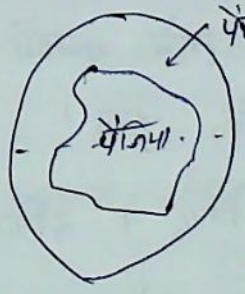

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्तर कार्बोनिफेरस काल के दौरान इस पैंजिया का लॉरेशिया एवं गोंडवाना लैण्ड नामक दो भूखण्डों में विभाजन हो गया तथा इनके बीच टेथिस सागर का निर्माण हो गया।

कालान्तर में इन दोनों भूखण्डों का आगे अनेक भूखण्डों में विभाजन हो गया तथा ये वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हो गए।

वेगनर ने इस विस्थापन के लिए दो बलों को मान्यता दी

(क) पृथ्वी का विभेदित (differential) गुरुत्वाकर्षण बल एवं उत्प्लावन बल- इससे भूखण्डों का भूमध्य रेखा की ओर विस्थापन हुआ

(ख) चन्द्रमा का ज्वारीय बल- इससे भूखण्डों का पश्चिम दिशा की ओर विस्थापन हुआ।

इस प्रकार वेगनर ने वर्तमान स्थल व जल के वितरण की व्याख्या करने का प्रयास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वेगनर के सिद्धान्त के पक्ष में प्रमाण-

(क) जिग सा फिट- उत्तरी अमेरिका व दक्षिणी अमेरिका तथा यूरोप व अफ्रीका के पश्चिमी तटों में साम्यता

(ख) जीवाश्म- मेसोसॉरस व ग्लोसोप्टेरिस के जीवाश्म

(ग) अमेरिका के ~~पश्चिमी~~ पूर्वी पर्वतों व यूरोप के पश्चिमी पर्वतों में समानता

(घ) ग्लेशियर निक्षेप

(ङ) लेमूरिया भूखण्ड

वेगनर की आलोचना

(क) जिग सा फिट सतह से नीचे लगभग १०० फिट नीचे पाया गया

(ख) विस्थापन हेतु आने वाले बलों का अपर्याप्त पाया जाना

(ग) विस्थापन के समय के बारे में स्पष्टता

(घ) जीवाश्मों का अन्य स्थानों पर भी पाया जाना

~~इस प्रकार~~ उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी वेगनर के सिद्धान्त को महाद्वीपों के प्रवाह के संबंध में अग्रगामी सिद्धान्त माना जाता है इसी के आधार पर बाद में सागर तिल के प्रसरण व प्लेट विवर्तनिकी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) सामाजिक केशिकत्व सिद्धांत पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on the Theory of Social Capillarity.

सामाजिक केशिकत्व का सिद्धान्त सामाजिक विकास से संबन्धित सिद्धान्त है। इसमें सबसे निम्न वर्ग के विकास पर पहले ध्यान दिया जाता है तथा माना जाता है कि इनके विकसित होने पर ऊपर के वर्ग स्वतः विकसित हो जाएँगे।

इसे 'बाटम-अप अप्रोच' के माध्यम से भी जाना जाता है। महात्मा गाँधी इस सिद्धान्त से काफी प्रभावित थे तथा वे गांवों के विकास को प्राथमिकता देते थे तथा मानते थे कि यदि गांव विकसित हो जाते हैं तो शहर अपने आप विकसित हो जाएंगे।

सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएँ

(क) इसमें निम्नतम स्तर के क्षेत्र या समुदाय के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकास को प्राथमिकता दी जाती है।

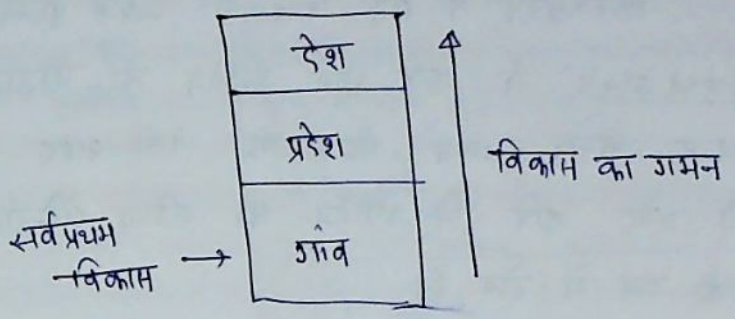

(ख) इसमें माना जाता है कि निम्नतम समुदाय या क्षेत्र के विकसित होने पर ऊपर के प्रदेश उसके विकास से प्रभावित होकर ~~अप~~ स्वतः विकसित हो जाएंगे

(ग) यह अन्तःनिस्पंदन (Infiltration) या टॉप टू बॉटम अप्रोच का विपरीत सिद्धान्त है।

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक केशिकत्व का सिद्धान्त समाज के निम्नतम वर्ग के सर्वप्रथम उत्थान से संबन्धित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) वान थ्यूनेन मॉडल के अंतर्गत कृषि भूमि उपयोग सीमांकन पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on the agricultural land use demarcation under Von Thünen model.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वान थ्युनेन ने सन् 1826 में अपनी पुस्तक 'the Isolated State' में कृषि भूमि उपयोग का सिद्धान्त दिया तथा विचार व्यक्त किया कि किसी शहर के चारों ओर कृषि भूमि उपयोग का प्रतिरूप संकेन्द्रीय वलयों के रूप में होता है।

उन्होंने कृषि भूमि उपयोग की इन वलयों के सीमांकन के लिए 'आर्थिक लगान (economic rent)' के सिद्धान्त का सहारा लिया।

आर्थिक लगान किसी फसल को उगाने पर होने वाले लाभ को बताता है।

आर्थिक लगान = फसल का मूल्य - (लागत + परिवहन)

चूंकि परिवहन की लागत की लागत शहर से दूर जाने पर बढ़ते हैं अतः आर्थिक लगान का मूल्य घटता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

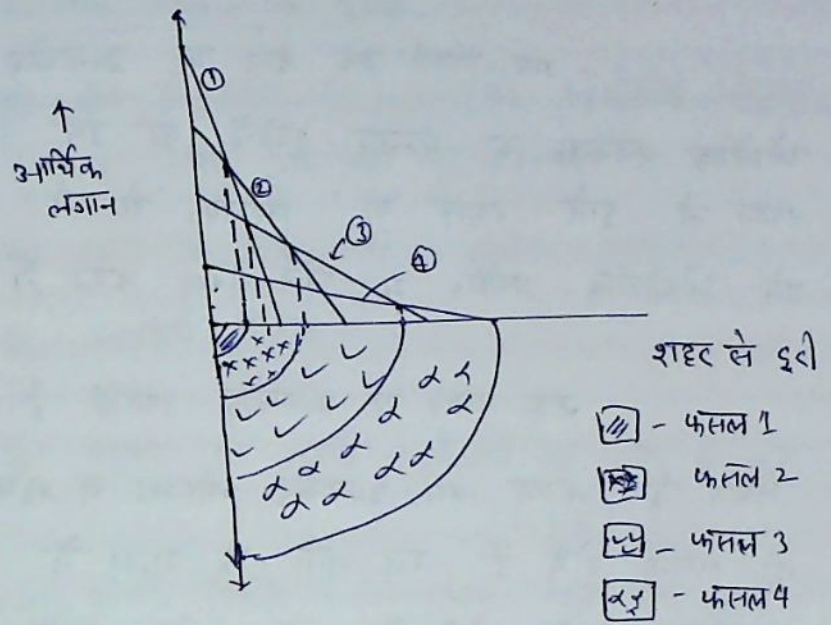

वान थुनेन ने किसी कृषि पेटी की बाहरी सीमा का निर्धारण आर्थिक लगान के आधार पर किया। जबकि आन्तरिक सीमा का निर्धारण हेतु उस पेटी में प्रतिस्पर्धा कर रही फसलों में से उस फसल को चुना जो अधिकतम आर्थिक लगान दे रही थी।

इस प्रकार वान थुनेन ने आर्थिक लगान के आधार पर शहर के चारों ओर 5 संकेन्द्रीय पेटियों के बारे में बताया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) औद्योगिक प्रकीर्णन से आशय स्पष्ट करें।

Explain the meaning of industrial dispersal.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब किसी एक केन्द्र पर अत्यधिक औद्योगिक विकास के पश्चात उद्योगों का उस स्थान से दूसरे स्थान पर विस्थापन हो तो उसे औद्योगिक प्रकीर्णन या विकेन्द्रीकरण कहते हैं

एक स्थान पर अत्यधिक उद्योगों के विकास के कारण वहां अत्यधिक भीड़भाड व प्रदूषण की समस्या होती है तथा भूमि के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि होती है। अतः अनेक उद्योग इस स्थान के बाहरी क्षेत्रों में जाने लगते हैं ताकि कम मूल्य में जमीन खरीद सकें एवं लागत कम कर सकें

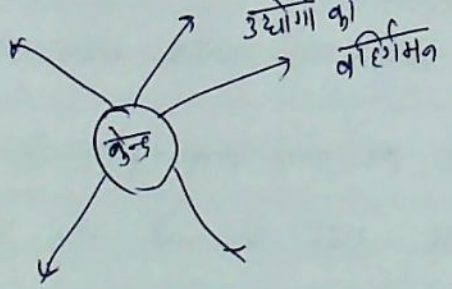

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औद्योगिक प्रकीर्णन के कारण -

(क) एक ही स्थान पर अत्यधिक औद्योगिक विकास के कारण भीड़-भाड़ व प्रतिस्पर्धा में वृद्धि

(ख) भूमि का उच्च मूल्य

(ग) सरकारी नीतियाँ

(घ) प्रदूषण का कारण → उद्योगों का शहर के बाहर स्थानान्तरण

(ङ) क्षेत्रीय विकास में असंतुलन को कम करने के लिए

इस प्रकार अनेक कारणों से उद्योगों का एक स्थान से चारों ओर प्रसार होता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) पार्थिव एकता के नियम पर समीक्षात्मक टिप्पणी कीजिये।

Critically comment on the principle of terrestrial unity.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पार्थिव एकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन सर्वप्रथम इमैनुअल कांट द्वारा किया गया था बाद में इसकी व्याख्या विडाल डि ला ब्लॉश द्वारा विस्तृत रूप में की गई.

पार्थिक एकता नियम की विशेषताएँ

(i) पर्यावरण एवं मानव की आपसी क्रिया पर बल

(ii) मानव को पर्यावरण के तत्वों में परिवर्तन का सक्रिय कारक माना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) नॉन पॉइंट प्रदूषण तथा उसके प्रकारों की संक्षिप्त चर्चा कीजिये।

Briefly discuss the non-point pollution and its types.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब कोई प्रदूषण किसी विस्तृत क्षेत्र पर होता है तो उसे नॉन प्वाइंट प्रदूषण कहा जाता है।

इस प्रदूषण

नॉन-प्वाइंट प्रदूषण की विशेषताएँ

(क) क्षेत्रीय विस्तार → कम करने में व कठिनाई

(ख) इसकी प्रकृति का अध्ययन करने में कठिनाई

(ग) कारणों को जानना कठिन

जैसे- विस्तृत क्षेत्र में फैला वायु प्रदूषण

प्रकार -

वायु प्रदूषण - यह एक विस्तृत क्षेत्र में फैलता है जिसकी कोई निश्चित सीमा नहीं होती है। इसका प्रसार व वितरण का कोई सामान्य प्रतिरूप नहीं होता है।

भूमि प्रदूषण - यह भी विस्तृत क्षेत्र में होता है जिसके पीछे अनेक कारक जिम्मेदार होते है जैसे- रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक इत्यादि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ध्वनि प्रदूषण- इसका भी क्षेत्रीय होता है

नॉन प्वाइंट प्रदूषण

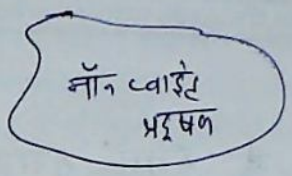

नॉन प्वाइंट प्रदूषण का स्रोत क्षेत्रीय प्रकृति का होता है जिस पर नियंत्रण पाना व उसका अध्ययन करना अत्यन्त कठिन कार्य होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (a) "किसी प्रदेश के नियोजन में यदि भौगोलिक संकल्पनाओं को स्थान नहीं दिया जाता तो ऐसा नियोजन बिना नींव की इमारत के समान होगा।" कथन के संदर्भ में भूगोल तथा प्रादेशिक नियोजन के संबंध को स्पष्ट करें। 15

"Planning of a region without geographical conceptions is like a building without foundation." In light of the statement discuss the relationship between geography and regional planning. 15

किसी प्रदेश के संसाधनों, समस्याओं का समुचित अध्ययन कर प्रदेश के विकास के लिए योजना बनाने को प्रादेशिक नियोजन की संज्ञा दी जाती है।

प्रादेशिक नियोजन अनेक भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों द्वारा प्रभावित होता है परन्तु भौगोलिक कारकों को प्रादेशिक नियोजन की नींव के रूप में स्वीकार किया जाता है।

प्रादेशिक नियोजन में भौगोलिक कारकों का महत्त्व निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है।

किसी प्रदेश की भूआकृतिक संरचना जिसमें उच्चावच, ढ़ाल • इत्यादि प्रमुख है, के बिना प्रदेश के नियोजन को प्रारंभ नहीं किया जा सकता। पहाड़ी प्रदेशों का नियोजन अलग प्रकार से होता है जबकि मैदानी प्रदेशों का नियोजन अलग प्रकार से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार किसी क्षेत्र की अपवाह प्रणाली के द्वारा जल उपलब्धता, बाढ़ क्षेत्र इत्यादि का ज्ञान होता है जिसका प्रादेशिक नियोजन में महत्वपूर्ण स्थान है

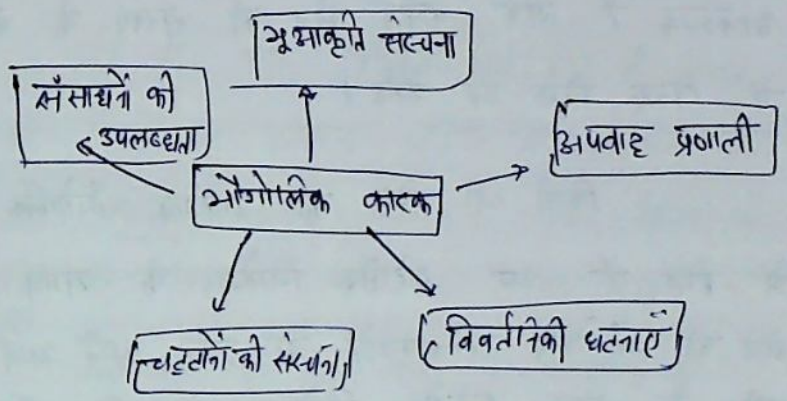

इसी के साथ उस क्षेत्र की चट्टानों की प्रकृति, उनमें वलन एवं संवलन का प्रकार, भ्रंशन की स्थिति इत्यादि के बारे में जानकारी आवश्यक है।

चट्टानों के प्रकार का वहां उपलब्ध जैविक एवं अजैविक संसाधनों से गहरा संबन्ध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होता है तथा संसाधनों को प्रादेशिक नियोजन के लिए आधारभूत आवश्यकता माना जाता है।

इसी के साथ विवर्तनिकी घटनाओं जैसे ज्वालामुखी, भूकंप, सुनामी, भूस्खलन इत्यादि के बारे में भी जानकारी आवश्यक है ताकि पलाव क्षेत्र की सुरक्षा के बारे में विचार किया जा सके।

किसी भी प्रदेश का अस्तित्व भौगोलिक वातावरण में होता है अतः प्रादेशिक नियोजन के समय उस क्षेत्र की भौगोलिक संकल्पनाओं का ज्ञान अति आवश्यक है वरना प्रादेशिक नियोजन के बिना नींव की इमारत के समान माना जाता है जिसका दीर्घकालिक स्थायित्व नहीं होता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) विश्व के कृषि प्रदेशों के वर्गीकरण को प्रस्तुत करते हुए भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेश की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिये। 20

Classify the various agricultural regions of the world and discuss the main features of the Mediterranean agricultural region. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संपूर्ण विश्व में भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों की भिन्नता के कारण कृषि का स्वरूप भिन्न - भिन्न पाया जाता है। अनेक विद्वानों कुछ समरूपताओं के आधार पर कृषि प्रदेशों के निर्धारण का प्रयास किया है।

कृषि प्रदेश ऐसे विस्तृत क्षेत्र होते हैं जिनमें फसल की किस्मों व उत्पादन पद्धति में समानता पायी जाती है। व्हिटलसी नामक विद्वान ने संपूर्ण विश्व को 13 प्रदेशों में विभाजित करने का प्रयास किया।

व्हिटलसी ने इन प्रदेशों के निर्धारण के लिए पाँच आधारों का सहारा लिया। इन प्रदेशों में प्रमुख प्रदेश निम्न हैं-

(क) चलवासी पशुचारण प्रदेश

(ख) व्यापारिक पशुचारण प्रदेश

(ग) स्थानान्तरण कृषि प्रदेश

(घ) आदिम स्थानबद्ध कृषि प्रदेश

(5) चावल गहन कृषि प्रदेश

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(6) चावल विहीन गहन कृषि प्रदेश

(7) भूमध्य सागरीय कृषि प्रदेश

(8) वाणिज्यिक ~~कृषि प्रदेश~~ अन्न कृषि प्रदेश

(9) कृषि व पशुपालन प्रदेश

(10) मिश्रित कृषि प्रदेश

(11) उद्यान कृषि प्रदेश

(12) डेयरी फार्मिंग प्रदेश

भूमध्यसागरीय कृषि प्रदेश. यह एक विशिष्ट कृषि प्रदेश है जिसका विस्तार भूमध्य सागरीय तटीय प्रदेशों, मध्य चिली, कैलिफोर्निया इत्यादि क्षेत्रों में है।

इस प्रदेश में अनेक खाद्यान्नों एवं फलों की कृषि की जाती है। इस प्रदेश में ग्रीष्मकाल शुष्क रहता है परन्तु शीत काल में वर्षा होती है।

इस प्रदेश में उगाये जाने वाले खाद्यान्नों में गेहूं, जौ, चावल, दालें इत्यादि प्रमुख है। फलों में अंगूर, चीकू, अनानास, नींबू इत्यादि प्रमुख है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी के साथ यहां पर बादाम, अखरोट, चेस्टनट इत्यादि की कृषि भी की जाती है। कुछ मात्रा में इस क्षेत्र में पशुपालन का कार्य भी किया जाता है।

इन क्षेत्र में अंगूर पर आधारित शराब उत्पादन के उद्योग भी स्थापित हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भूमध्य सागरीय कृषि प्रदेश स्ट्रीटलसी के कृषि प्रदेशों में से एक विशिष्ट कृषि प्रदेश है। इसके अलावा कोस्टोवेकी, एण्डरसन इत्यादि विद्वानों ने भी विश्व के कृषि प्रदेशों का निर्धारण करने का प्रयास किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(c) नगरीय आकारिकी से संबंधित संकेंद्रीय वलय सिद्धांत का समालोचनात्मक विश्लेषण करें। 15

Critically analyze the Concentric Zone theory on urban morphology. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नगर की भौगोलिक एवं कार्यात्मक संरचना को नगरीय आकारिकी की संज्ञा दी जाती है। इसके अन्तर्गत नगर की बनावट, ~~अन्~~ उसके अन्दर होने वाले कार्यों इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

नगर की आकारिकी के संबन्ध में अमेरिकी भूगोलवेत्ता बर्गेस का संकेन्द्रीय वलय सिद्धान्त एक प्रसिद्ध सिद्धान्त है जो उसने सन 1925 में शिकागो शहर के अध्ययन के पश्चात प्रस्तुत किया।

बर्गेस ने बताया कि नगर का विकास केन्द्र से अरीय रूप में बाहर की ओर होता है तथा पाँच प्रमुख संकेन्द्रीय वलयों का निर्माण होता है।

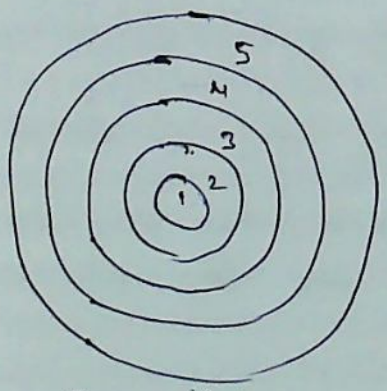

चित्र: संकेन्द्रीय वलय सिद्धान्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र (CBD) - यह नगर का प्रमुखतम क्षेत्र है जहाँ नगर के अत्यधिक विशिष्ट कार्य संपादित होते हैं। यह भीड़-भाड़ का इलाका होता है तथा नगर के केन्द्र में पाया जाता है। यहाँ भूमि का उच्च मूल्य होता है।

2. संक्रमणीय क्षेत्र - 'CBD' एवं उद्योगों के बीच का क्षेत्र ~~संक्रमीय~~ संक्रमणीय क्षेत्र होता है जहाँ आवासों का अत्यन्त निम्न स्तर पाया जाता है तथा मलिन बस्तियों का निर्माण होता है।

3. निम्न श्रेणी के आवास या श्रमिकों के आवास का क्षेत्र - CBD या उद्योगों में कार्य करने वाले कर्मचारियों का आवास क्षेत्र होता है। यहाँ दो या तीन मंजिला मकान होते हैं जिसमें नीचे दुकान एवं ऊपर घर होता है।

4. श्रेष्ठतर आवासीय क्षेत्र - मैनेजर, उद्योगों के मालिकों का निवास यहाँ पाया जाता है। यह ~~क्षेत्र~~ आवासीय दृष्टि से सुविधायुक्त क्षेत्र होता है।

5. अभिगमन क्षेत्र (Commuter's Zone) - यहाँ से लोग रोज शहर में काम करने जाते हैं तथा शाम को वापस लौट आते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु बर्गेस की निम्नलीखित आधारों पर आलोचना की जाती है

(क) CBD का हमेशा आकार वृत्तीय नहीं होता तथा यह हमेशा केन्द्र में नहीं पाया जाता

(ख) नगर के केन्द्र में पाया जाने वाला भूमि उपयोग नगर के अन्य भागों में भी पाया जा सकता है

(ग) कई पेटियों का विकास परिवहन मार्गों के सहारे हो सकता है।

(घ) यह केवल कुछ शहरों पर ही लागू होता है

हालांकि इस सिद्धान्त का अनेक विद्वानों द्वारा अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन के दौरान अध्ययन किया गया। बाद में इन्हीं आधारों पर होयट का बहुक्षेत्रीय मॉडल, बहुनाभिकीय मॉडल इत्यादि का विकास हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) "हमारी समस्या केवल अपने जीवन स्तर को सुरक्षित रखना ही नहीं है बल्कि उसे बनाए रखने की आवश्यकता है।" इस कथन के संदर्भ में भारत में महानगरों की बढ़ती समस्याओं पर प्रकाश डालिये तथा इस संबंध में नवाचारी उपाय सुझाइये। 20

The challenge before us is not only to secure a quality of life but also to maintain it. In light of the above statement, highlight the emerging problems of metropolitan cities in India and suggest some innovative measures to deal with them. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औद्योगिक क्रान्ति के बाद शहरीकरण की दर में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। वर्तमान में विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 55% भाग शहरों में निवास कर रहा है जो 2050 में 68% हो जाएगा।

नगरीकरण ने एक तरफ जहाँ मानवीय विकास के समक्ष अनेक संभावनाओं को विकसित किया है वहीं दूसरी ओर अनेक समस्याओं को जन्म भी दिया है।

नगरीकरण की प्रमुख समस्याएँ

(अ) जनसंख्या की तीव्र वृद्धि - ग्रामीण क्षेत्रों से तीव्र प्रवास के कारण शहरों की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है जिससे शहरी संरचना पर दबाव में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

(ब) स्थानाभाव की समस्या एवं भूमि के उच्च मूल्य के कारण मलिन बस्तियों के प्रसार में वृद्धि हुई है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ जीवन एवं आवास का अत्यन्त निम्न स्तर पाया जाता है। यहाँ पेयजल, स्वच्छता इत्यादि का अभाव होता है तथा मौलिकता निम्न स्तर पर पायी जाती है।

(ग) लोगों की संख्या में वृद्धि होने से आधारभूत सुविधाओं जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, बिजली, परिवहन इत्यादि पर दबाव बढ़ता जा रहा है जिससे इनकी गुणवत्ता में निरन्तर गिरावट आ रही है

(घ) लोगों की संख्या में वृद्धि से भीड़ भाड़ व परिवहन के साधनों में वृद्धि हो रही है जिसके परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण व ध्वनी प्रदूषण की समस्या व्याप्त है

(ङ) अशोधित सीवेज के कारण जल प्रदूषण

(छ) महिलाओं के खिलाफ अपराधों में वृद्धि

(ज) नगरीय उष्मन द्वीप (Heat Island) का निर्माण

अतः जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त समस्याओं का निराकरण अत्यन्त आवश्यक है जिसके लिए निम्नलिखित नवाचारी कदम उठाये जा सकते हैं –

(i) GIS व रिमोट सेंसिंग की सहायता लेकर नगरीय भूमि के उपयोग का अध्ययन कर उसका योजनानुसार नियोजन

(ii) मलिन बस्तियों के पुनर्वास के लिए PPP (सार्वजनिक निजी भागीदारी) मॉडल का प्रयोग

(iii) मुख्य नगर पर दबाव की कमी के लिए अनुषंगी नगरों व उपनगर (Umland) का विकास

(iv) सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा

इसी परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार द्वारा स्मार्ट सिटी मिशन, AMRUT कार्यक्रम इत्यादि योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है ताकि नगरों का संपोषणीय विकास कर इनको आर्थिक विकास के अग्रदूत बनाया जा सके तथा लोगों के जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) भौगोलिक चिंतन के विकास में फ्राँसीसी संप्रदाय के योगदान की चर्चा कीजिये। 15

Discuss the contribution of French community in the development of geographical concepts. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भौगोलिक चिन्तन का प्राचीन काल से ही विकास प्रचलित है जिसमें अनेक देशों के विद्वानों ने अपना योगदान दिया है।

इन्ही योगदानों में फ्रांसीसी संप्रदाय के योगदान को महत्वपूर्ण माना जाता है जिसने भौगोलिक चिन्तन की दशा व दिशा में आमूल-चूल परिवर्तन लाने का कार्य किया।

फ्राँसीसी संप्रदाय ने मानव-प्रकृति संबन्धों में मानव की प्रतिष्ठा को स्थापित करने का कार्य किया। इन्होने प्रमुख सिद्धान्त 'संभववाद' का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार प्रकृति मानव के समक्ष केवल विकल्प प्रस्तुत करती है तथा मानव उन विकल्पों का प्रयोग अपनी बुद्धि व क्षमता के अनुसार करता है।

फ्रांसिसियों के मानववादी होने के ~~नीचे~~ पीछे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनेक कारकों को उत्तरदायी माना जाता है। इस संप्रदाय के प्रमुख विद्वानों में ली फैब्रे, विडाल डि ला ब्लाश, जीन ब्रन्स, जिम्मरमैन इत्यादि प्रमुख हैं।

ली फैब्रे ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मानव भी प्रकृति में एक सक्रिय कारक है तथा वह अपने क्रियाकलापों के माध्यम से प्रकृति को प्रभावित करता है।

ब्लाश ने अपनी पुस्तक 'Geographic de humane' में संभववाद की संकल्पना को प्रमुखता से प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रकृति मानव के सिर्फ केवल विकल्प प्रस्तुत करती है।

जीन ब्रन्स ने प्रकृति को असहाय बताया तथा मत व्यक्त किया कि मानव अपनी शक्ति के माध्यम से प्रकृति पर डाका डालता है तथा प्रकृति कुछ नहीं कर पाती।

जिम्मरमैन ने अपनी पुस्तक 'संसाधन भूगोल' में बताया कि संसाधन होते नहीं वे बनाये जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी के साथ फ्रोसिसियों ने मानव भूगोल बनाम भौतिक भूगोल के द्वैतवाद में मानव भूगोल का पक्ष लिया तथा मानव की संस्कृति व दृश्यभूमियों के अध्ययन को महत्व दिया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि फ्रोसिसियों से पहले प्रकृति को सर्वशक्तिमान माना जाता था परन्तु इन्होंने मानव के बल व बुद्धि को महत्व देते हुए उसको सक्रिय कारक बताया। परन्तु इन्होंने मानव को आवश्यकता से अधिक महत्व देते हुए मानव-प्रकृति संबन्धों में असंतुलन पैदा कर दिया।)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) मानव भूगोल के संबंध में 'क्रियाशीलता के सिद्धांत' की स्पष्ट व्याख्या कीजिये। 15

Explain the 'principle of activity' with respect to human geography. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रियाशीलता के सिद्धान्त में मानव की सक्रियता पर ज्यादा बल दिया जाता है और माना जाता है मानव सक्रिय रूप से प्रकृति को प्रभावित करता है।

विशेषताएँ

(i) मानव का प्रकृति-मानव संबन्धों में सक्रिय अभिकर्ता होना

(ii) मानव प्राकृतिक दृश्यभूमि में परिवर्तन कर सांस्कृतिक दृश्यभूमि का निर्माण करता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

भूगोल (वैकल्पिक विषय)

माड्यूल-IV

(प्रथम प्रश्नपत्र-समग्र पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

*प्रश्न संख्या 1 और 5 **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के **उत्तर** दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।*

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation